National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 703-706

विवेकानन्द की संवाद संचार कला : एक अध्ययन

अमिता
सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारशं
संचार मानव की नैसर्गिक आवश्यकता है और संचार मानव का स्वभाव भी। संवाद संचार की प्रक्रिया का एक प्रमुख अंग है। संवाद के ही माध्यम से व्यक्ति अपने भाव, विचार, सोच को किसी दूसरे व्यक्ति या समूह तक संचारित करता है। भारत में संवाद संचार की परम्परा बहुत ही पुरानी है, जो वैदिक काल से अनवरत चली आ रही है। इस कड़ी में आधुनिक भारत के इतिहास में स्वामी विवेकानन्द एक गौरवपुन्ज के समान है। सर्वप्रथम विवेकानन्द ने ही भारत के आध्यात्मिक गौरव की पताका को विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक मंच पर प्रत्यारोपित किया। उन्होनें 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में भारतीय गौरव को प्रतिष्ठित ही नहीं, वरन् प्रमाणित भी किया। धर्म संसद मूक एवं अवाक होकर उनके द्वारा प्रसारित सन्देश को ग्रहण कर रही थी। यह एक प्रकार से उनके संवाद कला या प्रभावी संचार का ही प्रतिफल था। प्रस्तुत अध्ययन में विवेकानन्द के विविध भाषणों का संवाद संचार के पंच मापदण्डों के आधार पर मूल्यांकन किया जावेगा। इस अध्ययन के लिये स्वामीजी के विभिन्न ग्रन्थों में प्रकाशित 9 संदेशों का चयन सुविधाजनक निदर्शन पर किया जाएगा।

मूल शब्द : संवाद संचार, स्वामी विवेकानन्द।

प्रस्तावना : एक परिचय
जीवन सतत प्रवाहशील रहने की एक प्रक्रिया है। गतिशीलता की समाप्ति जीवन की भी समाप्ति है। जहां पर गतिशीलता है वहाँ पर संचार का होना आवश्यक है। संवाद के ही माध्यम से व्यक्ति अपने भाव, विचार, सोच को किसी दूसरे व्यक्ति या समूह तक संचारित करता है। वैदिक युग एवं उत्तरवैदिक युग की महानतम कृतियां आज संवाद संचार के ही माध्यम से सवंर्धित एवं सुरक्षित है। भारत में ही जन्में परिवाज्रको, भिक्षुओं, साधुओं एवं सन्यासियों ने संवाद संचार की महानतम परम्परा एवं विरासत को संरक्षित एवं प्रचारित किया है। इसी कारण से वेदों को श्रुति भी कहा जाता है, जिसका अर्थ सुना हुआ माना जाता है। अर्थात् जो भी वेद ग्रंथ हमारे पास है, वो श्रुति परम्परा का ही प्रतिफल है।

महात्मा बुद्ध से लेकर महावीर शंकाराचार्य, चैतन्य, कबीर एवं नानक ने संवाद संचार के माध्यम से एक व्यापक जनसमूह तक अपने आध्यात्मिक एवं मानवीय संदेशों को प्रचारित किया। इस कड़ी में आधुनिक भारत के इतिहास में स्वामी विवेकानन्द एक गौरवपुंज के समान है। विवेकानन्द के बाद महात्मा गांधी ने भी संवाद संचार की परम्परा को जनोन्मुखी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। परन्तु सर्वप्रथम विवेकानन्द ने ही भारत के आध्यात्मिक गौरव की पताका को विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक मंच पर प्रत्यारोपित किया। एक सामान्य वस्त्र पहनने वाले, सामान्य कद काठी एवं आकार–प्रकार के उस व्यक्ति में ऐसा क्या खास था कि धर्म ससंद मूक एवं अवाक् होकर उनके द्वारा प्रसारित संदेश को ग्रहण कर रही थी। यह एक प्रकार से उनके संवाद कला या प्रभावी संचार का ही प्रतिफल थाा।

रामकृष्ण परमहंस ने गुरू दक्षिणा लेने व उनके माध्यम से अपने आध्यात्मिक जिज्ञासाओं की पुष्टि के बाद विवेकानन्द ने आध्यात्म के माध्यम से विश्व विजय किया। इससे पहले विश्व विजय की परम्परा राजनीतिक थी, परन्तु स्वामी जी का अभियान आध्यात्मिक एवं मानवीय था, जिसका एकमात्र लक्ष्य वैश्विक सहिष्णुता एवं विश्व बंधुत्व की स्थापना थी। हालांकि सिकन्दर ने भी विश्व विजय का स्वप्न देखा था, परन्तु उसके विजय की कामना में एक अंहकार और मैं का भाव था। विश्व के इतिहास में सबसे पहले सम्राट अशोक ने आध्यात्मिक विजय की परिकल्पना की और धम्म प्रसार के माध्यम से, इस परिकल्पना को साकार बनाया। परन्तु अशोक की धम्म पताका भी दक्षिण एशिया तक ही सिमट कर रह गई जबकि उसके पास शासन सत्ता के समस्त उपादान मौजूद थे।

स्वामीजी ने बिना किसी संसाधन एवं उपादान के अपने अंतःचेतना के बल पर भारतीय गौरव पताका को विश्व मंच पर स्थापित किया। एक सन्यासी के लिये यह असम्भव सा कार्य था। विवेकानन्द को विश्व प्रसिद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका उनकी संवाद शैली और अभिभाषण के तरीके ने निभाई। ऐसा माना जाता है कि उनके अभिभाषण में एक जादू था। जब उन्होनें धर्मससंद में अपने उद्बोधन में अमेरिका के भाईयों एवं बहनों शब्द का प्रयोग किया तो वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति अवाक् एवं मंत्रमुग्ध होकर उनके शब्दधारा में विलीन होते चला गया। प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से विवेकानन्द के विविध भाषणों का संवाद संचार के पांच मापदण्डों के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन के लिये विभन्न ग्रन्थों में प्रकाशित स्वामी जी के 9 संदेशों का चयन किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य
- स्वामी विवेकानन्द के संवाद संचार का मूल्यांकन करना।
- संवाद संचार के विविध मापदण्डों के आधार पर विवेकानन्द के संदेशों का अध्ययन करना।
- विवेकानन्द के संदेशों की सम्प्रेषणीयता का अध्ययन करना।

अध्ययन की प्रविधि
प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधाजनक निदर्शन विधि के माध्यम से अलग–अलग पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित स्वामी विवेकानन्द के संदेशों का चयन किया गया है। जब शोध समस्या की प्रकृति वैशेषिक होती है तब निदर्शन के लिये उद्देश्यपूर्ण

निदर्शन विधि का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि यह शोध समस्या विशेष प्रकार की थी एवं संदेशों का चयन करना एक कठिन कार्य था। अतः अनुसंधान आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये संदेशों का चयन किया गया। दूसरे स्तर में चयनित संदेशों का संवाद संचार के 5 मापदण्डों के आधार पर मूल्यांकन किया गया। इस कार्य हेतु संदेशों का मूल्यांकन अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि के माध्यम से किया गया है।

संवाद संचार के मापदण्ड

निम्नांकित पांच आधारों पर विवेकानन्द के भाषणों एवं संदेशों का मूल्यांकन किया गया है एवं संवाद संचार की दृष्टि से उनकी विवेचना की गई है।

प्रवाहशील भाषा।
उपयुक्त शब्दों का चुनाव।
तर्कपूर्ण प्रस्तुति।
ओजपूर्ण संवाद शैली।
संवाद शैली में प्रस्तुती।

विवेकानन्द के उद्‌बोधन : एक विवेचना

सचमुच तुम धन्य हो कि सस्व्हत भगवतस्वरूप गरीब भिखारी तुम्हारें द्वार पर आया है। दुखी और गरीब लोग तो हमारी ही मुक्ति के लिये है, ताकि रोगी, कोढी, पापी और पागल के रूप में अपने सामने आने वाले प्रभु की हम पूजा सेवा कर सकें। नव भारत निकल पड़े, मोची की दुकान से, भड़भूजे के भाड से, कारखाने के हात से, बाजार से, निकल पड़े, झुग्गी–झोंपडियों, जंगलों, पहाडों एवं पर्वतों से, जागों और स्वयं जागकर औरों को जगाओ।

तालिका 1

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
प्रस्तुत कथन में प्रयुक्त भाषा में डॉट, अर्धविराम एवं पूर्ण विराम के उपयुक्त प्रयोग से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	भगवत स्वरूप, नया भारत, भडभूजे के भाड, हाट, जागों, जैसे आम शब्दों का प्रयोग संबोधन के लिये उपयुक्त है।	भगवत स्वरूप की गरीब भिखारी से तुलना, नव भारत की दरिद्र भारत से तुलना प्रस्तुती में तर्क का पुट डालती है।	तुम धन्य हो, नया भारत निकल पडे, जैसे शब्द ओजपूर्ण है।	जागो और स्वयं जागकर औरों को जगाओ, का उद्‌बोधन संवाद के लिये उपयुक्त है।

मुझे सांसारिक सुख सुविधाएं प्राप्त करने वाली सिद्‌धियां नहीं चाहिये। ऐसी सिद्‌धियां लेकर मैं क्या करूंगा जिनसे वास्तविक ईश्वर के दर्शन न हो सकें ..... मेरा भगवान तो दरिद्रजनों में बसता है। आपको सिखाया गया है अतिथि देवो भव, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव। पर मैं आपसे कहता हूँ दरिद्र देवो भव, अज्ञानी देवो भव, मुर्ख देवो भव, इसी देवता की पूजा आज का युगधर्म है।

तालिका 2

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
प्रस्तुत कथन में प्रयुक्त भाषा में डॉट, अर्धविराम एवं पूर्ण विराम के उपयुक्त प्रयोग से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	दरिद्रजनों, दरिद्र देवो भव, अज्ञानी देवो भव, मुर्ख देवो भव, जैसे शब्द बहुत ही प्रभावी प्रतीत होते है।	सुख सुविधाएं प्राप्त करने वाली सिद्धियां, भगवान तो दरिद्रजनों में बसता जैसे वाक्य तर्कपूर्ण है।	इसी देवता की पूजा आज का युगधर्म है, जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	सिद्धियां लेकर मैं क्या करूंगा, मैं आपसे कहता हूँ, संवाद के रूप में है।

साहसी होकर काम करो। धीरज और स्थिरता से काम करना, यही एक मार्ग है। आगे बढ़ो और याद रखो धीरज, साहस, पवित्रता और अनवरत कर्म। जब तक तुम पवित्र होकर अपने उद्‌देश्य पर डटे रहोगे, तब तक तुम कभी निष्फल नहीं होगे।

तालिका 3

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
वाक्य में डॉट, अर्धविराम एवं पूर्ण विराम के उपयुक्त प्रयोग से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	साहसी, धीरज, पवित्रता और अनवरत कर्म जैसे शब्द बहुत ही प्रभावी प्रतीत होते है।	पवित्र होकर अपने उद्‌देश्य पर डटे रहोगे, तब तक तुम कभी निष्फल नहीं होंगे जैसे वाक्त तर्कपूर्ण है	साहसी होकर काम करो, उद्‌देश्य पर डटे रहोगे, जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	आगे बढ़ो और याद रखो संवाद के रूप में है।

मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी के समस्त मत–पंथों और देशों द्वारा सताये गये और नकार दिये गये, असहाय लोगों को आश्रय दिया है।

तालिका 4

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
प्रस्तुत कथन में अर्धविराम एवं पूर्ण विराम के उपयुक्त प्रयोग से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	अभिमान, मत, पंथों असहाय, सताये गये जैसे शब्द बहुत ही प्रभावी प्रतीत होते है।	संपूर्ण कथन ही तर्कपूर्ण है।	मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	मुझे वाक्य का आरम्भ सशक्त शैली का नमूना है।

जब स्वामीजी से एक मुसलमान के घर ठहरने पर प्रश्न किया गया तब ..... महाशय ! आप क्या कहते है ? मैं सन्यासी हूँ ? मैं सभी सामाजिक रीति रिवाजों के ऊपर हूँ। मैं एक भंगी के साथ भी भोजन कर सकता हूँ ? मैं सर्वत्र ब्रह्म का दर्शन करता हूँ, क्षुद्रमय जीव में भी। मेरे लिये कोई ऊंचा या नीचा नहीं है।

तालिका 5

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
कथन में प्रश्नवाचक, विस्मयबोधक चिन्हों, अर्धविराम एवं पूर्ण विराम का उपयुक्त सामंजस्य है।	सर्वत्र ब्रह्म, क्षुद्रमय जीव जैसे शब्द बहुत ही प्रभावी प्रतीत होते है।	ब्रह्म का दर्शन करता हूँ, क्षुद्रमय जीव में भी, जैसे वाक्य तर्कपूर्ण है।	मैं सभी सामाजिक रीति रिवाजों के ऊपर हूँ जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	महाशय। आप क्या कहते है ? मैं, मेरे लिये, संवाद के रूप में है।

मेरे बच्चों, आगे बढो। सारे विश्व को दिव्य प्रकाश की आवश्यकता है, वह इसकी प्रतीक्षा कर रहा है। केवल भारत के पास ही वह ज्योति है किन्तु वह जादू–टोने या इंद्रजाल में नहीं है, अपितु वह है धर्म की सच्ची शिक्षा, धर्म के प्राण–उच्चतम आध्यात्मिक सत्यों में। इसलिये ईश्वर ने इस जाति को इतनी विपत्तियों के मध्य भी बचा रखा है। अब वह समय आ गया है, मेरे बच्चों, विश्वास रखों कि तुम सबका जन्म महान कार्य करने के लिये हुआ है।

तालिका 6

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
कथन में प्रयुक्त भाषा में डॉट, विस्मयबोधक चिन्हों, अर्धविराम एवं पूर्ण विराम के उपयुक्त प्रयोग से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	दिव्य प्रकाश, आध्यात्मिक सत्यों, इंद्रजाल, जैसे शब्द बहुत ही प्रभावी प्रतीत होते है।	सम्पूर्ण कथन ही तर्कपूर्ण है।	मेरे बच्चों आगे बढ़ो। सारे विश्व को दिव्य प्रकाश की आवश्यकता है, भारत के पास ही वह ज्योति है, जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	मेरे बच्चों, आगे बढो। मेरे बच्चों विश्वास रखो, संवाद के रूप में है।

अविनाशी आनन्द के पुत्रों – कितना मधुर एवं आशाप्रद संबोधन है। भाईयों मुझे तुम्हें इसी मधुर नाम से पुकारने दो–अमृतसन्तति। हिन्दू तुम्हें पापी कहना स्वीकार नहीं करता। तुम ईश्वर की संतान हो, अनन्त आनन्द के सहभागी, पवित्र और पूर्ण जीव हो, पृथ्वी पर तुम देवता हो – तुम पापी। मनुष्य को पापी कहना ही पाप है। यह मनुष्य के स्वभाव का अपमान करता है। ओ सिंहो, उठो! इस भ्रम को झाड़ फेंको कि तुम भेड़ हो, तुम नित्यमुक्त, शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य, अमर आत्मा हो।

तालिका 7

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
कथन में प्रयुक्त भाषा में डॉट, अर्धविराम एवं पूर्ण विराम के उपयुक्त प्रयोग किये गये है।	आनन्द, अविनाशी अमृतसन्तति, नित्यमुक्त, शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य जैसे शब्द बहुत ही प्रभावी है।	तुम ईश्वर की संतान हो जैसे वाक्य और सम्पूर्ण कथन ही तर्कपूर्ण है।	अविनाशी आनन्द के पुत्रों, ओ सिंहो, उठो। इस भ्रम को झाड फेंको, जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	भाईयों मुझे, तुम देवता हो, तुम पापी, संवाद के रूप में।

धर्म–भेद, दुराग्रह और उसका भंयकर दुष्परिणाम, धर्मान्धता ने लम्बी अवधि में इस सुन्दर पृथ्वी पर अधिकार कर रखा है। उन्होनें इस पृथ्वी को हिंसा से भर दिया है, इसे मानव रक्त से रंजित कर दिया है, सभ्यताओं का विनाश कर किया है तथा समूचे राष्ट्रों को निराशा में डुबो दिया है। यदि ये भंयकर राक्षस न होते तो मानव आज की तुलना में कहीं अधिक उन्नत होता।

तालिका 8

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
प्रस्तुत कथन में शब्द समन्वय से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	धर्म–भेद, दुराग्रह, भंयकर दुष्परिणाम, धर्मान्धता, रक्त से रंजित, शब्द बहुत ही प्रभावी है।	सम्पूर्ण कथन ही तर्कपूर्ण है।	शब्द समन्वय के माध्यम से सम्पूर्ण वाक्य ओजपूर्ण प्रतीत होता है।	

स्वामीजी ने देशभक्ति पर अपने विचार व्यक्त करते हुये संदेश दिया कि व्यवहारिक देशभक्ति का अर्थ केवल अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेमपूर्वक संवेदनात्मक लगाव ही नहीं है, अपितु देशवासियों की प्राणपण से सेवा करने की उत्कंठा भी है। मैने पूरे भारत का पैदल भ्रमण किया है तथा उसकी दुर्दशा, अज्ञान और घिनौनेपन को अपनी आंखों से देखा है। मेरी सम्पूर्ण आत्मा धधक उठी है तथा इस दुरावस्था को दूर करने की तीव्र प्रदीप्त इच्छा से मैं जल रहा हूँ। यदि तुम ईश्वर को पाना चाहते हो तो मनुष्य की सेवा करो। नारायण तक पंहुचने के लिये दरिद्रनारायण की सेवा करो, भारत के लाखों बुभुक्षुओं की सेवा करो।

तालिका 9

प्रवाहशील भाषा	उपयुक्त शब्दों का चुनाव	तर्कपूर्ण प्रस्तुती	ओजपूर्ण संवाद शैली	संवाद शैली में प्रस्तुती
प्रस्तुत कथन में शब्द समन्वय से भाषिक प्रवाह को बरकरार रखा गया है।	देशभक्ति, मातृभूमि, संवेदनात्मक, दुर्दशा, अज्ञान, घिनौनापन, प्रदीप्त, दरिद्रनारायण शब्द बहुत ही प्रभावी है।	नारायण तक पंहुचने के लिये दरिद्रनारायण की सेवा करो, जैसे वाक्य तर्कपूर्ण है।	मेरी सम्पूर्ण आत्मा धधक उठी है, जैसे वाक्य ओजपूर्ण है।	मैने पूरे भारत का पैदल भ्रमण किया, मै जल रहा हूँ, संवाद के रूप में है।

निष्कर्ष

- विवेकानन्द के विविध संदेशों का मूल्यांकन करने के बाद यह आसानी से कहा जा सकता है कि उनकी संचार समझ पैनी थी और वे संदेश को प्रभावी तरीके से संप्रेषित करने में सक्षम थे। अध्ययन में संवाद संचार के प्रथम मापदण्ड प्रवाहशील भाषा को रखा गया है, जिस आधार पर विवेकानन्द के समस्त संदेश पूर्ण

रूप से प्रवाह एवं लय में है। जो पाठक या श्रोता को बांधे रखने में सक्षम प्रतीत होते है।

- स्वामीजी ने अपने संदेशों में जिन शब्दों का संबोधन के लिये उपयोग किया है, वे शब्द बहुत ही प्रभावी एवं आमजन को अपील करने में समर्थ है। हालांकि कुछ शब्द कठिन एवं दुरूह है परन्तु संवाद को प्रवाहशील एवं ओजपूर्ण बनाने के लिये उनका प्रयोग करना नितांत ही प्रासंगिक है। कुल मिलाकर स्वामीजी द्वारा चयनित शब्द ये साबित करते हैं कि उनका भाषा पर अधिकार था। वे अपने संवाद को प्रापक के स्तर के अनुरूप संप्रेषित करने में समर्थ थे।
- अध्ययन में तीसरा आधार तर्कपूर्ण प्रस्तुती को माना गया है और विवेकानन्द के संदेश इस कारण से भी प्रभावी प्रतीत होते हैं कि वे प्रत्येक संदेश को तर्क के माध्यम से, ऐतिहासिक साक्ष्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। ऐसे में स्वामीजी की संचार कला अद्भुत है।
- संवाद चौथा आधार ओजपूर्ण शैली को माना गया है। इस आधार पर स्वामीजी का प्रत्येक संदेश एक नयी ऊर्जा का संचार करता है। एक सामान्य श्रोता भीख् जब आज भी उनके संदेशों को सुनता है तो उसका मन अतिशय ऊर्जा एवं आक्रोश से भर उठता है। उनके संदेशों में एक प्रकार की स्वतः स्फूर्त चेतना का संचार होता है, जो प्रापक को उद्वेलित करते है। इस आधार पर भी विवेकानन्द बहुत ही प्रभावी संचारक साबित होते है।
- पांचवा आधार संवाद शैली में प्रस्तुति को माना गया है। विवेकानन्द अपने संबोधनों में हमेशा ही मेरा, तुम, हमारा, उठो, जागो, जैसे संबोधनात्मक शब्दों का प्रयोग करते है जो उनकी संवाद शैली को प्रापक केन्द्रित बनाता है। साथ ही प्रापक एवं संचार के मध्य अंतः क्रियात्मक संबंधो को प्रोत्साहित करता है।

संदर्भ सूची

1. विवेकानन्द एक सचित्र जीवनी, 2012, अद्वैत आश्रम, कोलकाता।
2. पांचजन्य, जनवरी 2016।
3. दिनकर, रामधारीसिंह, सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के पिता, जनवरी 2013 पांचजन्य।
4. कोहली, नरेन्द्र, वे विश्व गुरू थे, जनवरी 2016, पांचजन्य।
5. सहगल, नरेन्द्र, दरिद्र देवो भव, जनवरी 2016 पांचजन्य।
6. http://en.wikipedia.org/wiki/swami_vivekanand